ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की जीवन शैली का अध्ययन

महेश कुमार मुछाल*

व्यक्ति की जीवन शैली आर्थिक-सामाजिक स्थिति, पारिवारिक-सामाजिक माहौल, सामाजिक-धार्मिक मूल्यों एवं मान्यताओं तथा उसकी शिक्षा और परिवार के समन्वय के साथ निर्मित होती है, जिसमें विद्यालय की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चे विद्यालयी परिवेश में अपने अध्यापकों एवं साथियों के आचरण, विचारों, कार्य शैली, व्यवहारों आदि का अवलोकन करके सीखते हैं। यह शोध पत्र ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य-केंद्रित, शैक्षिक उन्मुख, जीविका उन्मुख, समाज उन्मुख, चलन (ट्रेंड) संबंधी एवं परिवार उन्मुख जीवन शैली के अध्ययन पर आधारित है। इस शोध के परिणामस्वरूप ज्ञात हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य-केंद्रित, शैक्षिक उन्मुख, आजीविका उन्मुख एवं चलन (ट्रेंड) संबंधी जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की समाज उन्मुख एवं परिवार उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में सार्थक अंतर है।

जीवन शैली का अर्थ होता है कि हम कैसे जीवन को व्यतीत करते हैं। जीवन शैली आर्थिक-सामजिक स्थिति एवं पारिवारिक-सामाजिक माहौल, सामाजिक-धार्मिक मूल्यों एवं मान्यताओं तथा उनकी शिक्षा और परिवार के समन्वय के साथ निर्मित होती है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, प्रदूषण, भौतिक सुख-सुविधाओं की उपलब्धता बदलती सामाजिक व आर्थिक स्थिति, भूमंडलीकरण इत्यादि जैसे कारणों से सोच और जीवन शैली में तेज़ी से बदलाव आ रहा है। जिसके कारण भोजन, शारीरिक गतिविधियाँ, सक्रियता, कार्य शैली और सोच में भी परिवर्तन आ रहा है। कुछ लोग धूम्रपान, गुटका, शराब, नशीले पदार्थों के आदी होते जा रहे हैं तथा उनके जीवन में शांति एवं सुकून का अभाव होता जा रहा है। प्रतिस्पर्धा अधिक बढ़ रही है। जीवन तनाव में व्यतीत हो रहा है और चारों तरफ़ नाना प्रकार के खाद्य पदार्थों की भरमार है। कुछ लोग ज़रूरत से ज़्यादा असंतुलित भोजन कर मोटापे का शिकार हो रहे हैं। अतः स्वस्थ एवं खुश रहने के लिए जीवन शैली में सुधार की आवश्यकता है। विद्यालयों में शिक्षक शिक्षण संबंधी कार्य करते हैं। शिक्षकों के जीवन से विद्यार्थी प्रेरणा लेते हैं, यदि शिक्षक स्वस्थ नहीं होंगे और उनकी जीवन

**एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, अध्यापक प्रशिक्षण विभाग, दिगम्बर जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़ौत (बागपत), उत्तर प्रदेश–250611

शैली ठीक नहीं होगी, तो ऐसी स्थिति में 'स्वस्थ एवं स्वच्छ भारत' के भविष्य का निर्माण करना मुश्किल होगा। विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास ऐसी स्थिति में नहीं हो सकता, इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक की जीवन शैली अच्छी एवं प्रेरणादायी हो।

अध्ययन का औचित्य

वाणी, एम. और लक्ष्मी डी. (2013) ने 'एक्रॉस कल्चर लाइफ़स्टाइल ऑफ़ कॉलेज स्टूडेंट' विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य थे — कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों की जीवन शैली का अध्ययन करना। नगरीय एवं शहरी तथा महिला एवं पुरुष के आधार पर जीवन शैली का अध्ययन करना। न्यादर्श के रूप में पश्चिम बंगाल एवं छत्तीसगढ़ के 160 विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यार्थियों की जीवन शैली का अध्ययन करने के लिए लाइफ़स्टाइल स्केल का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि छत्तीसगढ़ में रहने वाले विद्यार्थियों की जीवन शैली पश्चिम बंगाल के विद्यार्थियों की जीवन शैली की तुलना में बेहतर थी तथा शहरी लड़कियों की अपेक्षा ग्रामीण लड़कियों एवं शहरी व ग्रामीण लड़कों से लड़कियों की जीवन शैली बेहतर पाई गई।

ओमर, अब्दुल्लाह और अतिया मोहम्मद फातिया (2013) ने 'दि रिलेशनशिप बिटवीन लाइफ़स्टाइल, जनरल हेल्थ एंड एकेडेमिक स्कोर्स ऑफ़ नर्सिंग स्टूडेंट्स' विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य नर्सिंग विद्यार्थियों की स्वस्थ और अस्वस्थ आदतों का पता लगाना था। विद्यार्थियों की आदतों का सामान्य स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा उस सामान्य स्वास्थ्य का अकादमिक अंकों पर क्या प्रभाव पड़ता है, का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया। शोध अध्ययन हेतु निर्मित प्रश्नावली में एंथ्रोपोमेट्रिक मेजरमेंट का प्रयोग किया गया। निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि स्वास्थ्य एवं स्वस्थ आदतों तथा अकादमिक अंकों के मध्य सकारात्मक संबंध होता। पंकज, एस. सुवेरा और सुनील जादव (2014) द्वारा 'स्टडी ऑफ़ लाइफ़स्टाइल अमंग अर्बन एंड रूरल एजुकेटेड' नामक विषय पर शोध किया गया। निष्कर्ष में पाया कि जीवन शैली पर क्षेत्र एवं जेंडर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

रोहित और मकवाना (2015) ने महाविद्यालय में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के 200 विद्यार्थियों की जीवन शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है। सामान्य एवं आर्थिक श्रेणी के विद्यार्थियों की जीवन शैली में कोई अंतर नहीं है। एकाकी परिवार एवं संयुक्त परिवार की जीवन शैली पर कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। हिंदू-मुस्लिम विद्यार्थियों की जीवन शैली पर कोई प्रभाव नहीं होता है। कुमार, राजेंद्र और परमार मूलजीभाई (2016) ने 'शिक्षित बेरोज़गार युवाओं का समायोजन, जीवन शैली और जीवन संतुष्टि के मध्य सह-संबंध' का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि समायोजन एवं जीवन संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है। वहीं, जीवन संतुष्टि एवं जीवन शैली के मध्य धनात्मक सह-संबंध पाया गया। श्रोत्रिय और गुप्ता (2018) ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों

की जीवन शैली का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया गया कि सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च जीवन शैली वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयाम की श्रेष्ठता की भावना में सार्थक अंतर नहीं होता है। सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत जीवन शैली के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयाम तथा श्रेष्ठता की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। लेकिन अभी तक विद्यार्थी-शिक्षकों की जीवन शैली पर अध्ययन नहीं किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी-शिक्षकों की जीवन शैली और नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थी-शिक्षकों की जीवन शैली पर (निवास क्षेत्र का जीवन शैली पर) क्या प्रभाव पड़ता है, का अध्ययन करने हेतु यह शोध अध्ययन किया गया।

उद्देश्य

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य केंद्रित, शैक्षिक उन्मुख, आजीविका उन्मुख, समाज उन्मुख, चलन (ट्रेंड) संबंधी एवं परिवार उन्मुख जीवन शैली का अध्ययन करना।

परिकल्पना

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य केंद्रित, शैक्षिक उन्मुख, आजीविका उन्मुख, समाज उन्मुख, चलन (ट्रेंड) संबंधी एवं परिवार उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस अध्ययन में 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया था।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के बागपत जनपद के बी.एड. में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी-शिक्षकों को शोध अध्ययन के लिए चुना गया। इस शोध में दिगंबर जैन महाविद्यालय, अध्यापक प्रशिक्षण विभाग, बी. एड. प्रथम वर्ष के सत्र 2018–19 के विद्यार्थी-शिक्षकों को लिया गया। न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन की लाटरी विधि का प्रयोग किया गया। ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र से 60 विद्यार्थी-शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया।

उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोधक द्वारा प्रदत्तों को एकत्र करने हेतु एस. के. बाबा और एस. कौर (2010) द्वारा निर्मित जीवन शैली मापनी का प्रयोग किया गया। यह मापनी प्रमाणीकृत है।

आँकड़ों का संकलन

न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यार्थी-शिक्षकों को निर्देशित करने के उपरान्त, एस. के. बाबा और एस. कौर (2010) द्वारा निर्मित जीवन शैली मापनी को भरवाकर आँकड़े एकत्रित किए गए।

प्रयुक्त सांख्यिकी

इस शोध अध्ययन में आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिणामों की व्याख्या

इस शोध अध्ययन हेतु एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण से करने के पश्चात् प्राप्त परिणामों की व्याख्या इस प्रकार है—

तालिका 1— ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य-केंद्रित जीवन शैली के मध्यमानों का टी-अनुपात

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	30	36.27	3.34	1.62	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
शहरी	30	34.94	2.99		

तालिका 1 में टी-अनुपात का मान 1.62 है, जो कि मुक्तांश 58 पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.02 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य केंद्रित जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, को 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य केंद्रित जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य-केंद्रित जीवन शैली लगभग समान है, इसका कारण यह हो सकता है कि वे समान आयु वर्ग एवं समान स्तर पर अध्ययन करते हैं।

साथ ही, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता में अंतर नहीं है। आज तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी के साधन इतने विकसित हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षक इन तकनीकी साधनों, जैसे—मोबाइल, इंटरनेट आदि का प्रयोग कर स्वास्थ्य संबंधी सूचनाएँ समान रूप से प्राप्त कर लेते होंगे। इसलिए दोनों समूहों के विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य संबंधी आदतें, खान-पान, व्यवहार, पसंद, नापसंद आदि समान होंगी। स्वास्थ्य-केंद्रित जीवन शैली में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य और खान-पान संबंधी आदतों के प्रति जागरूकता, जीवन शैली संबंधी क्रियाएँ समान रूप से समान हो सकती हैं। इस आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य-केंद्रित जीवन शैली समान है।

तालिका 2 में टी-अनुपात का मान 1.67 है, जो कि मुक्तांश 58 पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.02 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की शैक्षिक उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, को 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की

तालिका 2— ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की शैक्षिक उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों का टी-अनुपात

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	30	30.35	2.93	1.67	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
शहरी	30	29	3.31		

शैक्षिक उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की शैक्षिक उन्मुख जीवन शैली लगभग समान है।

इसका कारण यह हो सकता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थी-शिक्षक समान आयु वर्ग एवं समान स्तर पर अध्ययन करते हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में शिक्षा संबंधी सारी सुविधाएँ भी लगभग समान होंगी। दोनों ही क्षेत्रों में तकनीकी साधनों एवं शिक्षा संबंधी जागरूकता एवं शिक्षा प्राप्ति हेतु पर्याप्त साधन उपलब्ध होंगे। इसलिए ग्रामीण एवं शहरी, दोनों ही क्षेत्रों के विद्यार्थी-शिक्षकों की शिक्षा उन्मुख जीवन शैली में समानता होगी। इस आधार पर निष्कर्षस्वरूप कह सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की शिक्षा उन्मुख जीवन शैली समान है।

तालिका 3 में टी-अनुपात का मान 1.76 है, जो कि मुक्तांश 58 पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.02 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की आजीविका उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, को 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की आजीविका उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की आजीविका उन्मुख जीवन शैली लगभग समान है।

इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षक समान आयु वर्ग एवं समान स्तर पर अध्ययन करते हैं। आज के युग में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में भी पर्याप्त शिक्षा हेतु विद्यालय एवं अन्य शिक्षा व तकनीकी संस्थान पर्याप्त रूप से उपलब्ध हैं। इसके अलावा शिक्षा हेतु ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध है। इस आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की आजीविका उन्मुख जीवन शैली समान है।

तालिका 4 में टी-अनुपात का मान 2.69 है, जो कि मुक्तांश 58 पर 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.66 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की समाज उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, को 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की समाज उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में सार्थक अंतर है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की समाज उन्मुख जीवन शैली समान नहीं है।

तालिका 3 — ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की आजीविका उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों का टी-अनुपात

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	30	28.2	2.67	1.76	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
शहरी	30	29.25	1.86		

तालिका 4— ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की समाज उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों का टी-अनुपात

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	30	28.2	2.67	2.69	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक
शहरी	30	30.35	2.93		

इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षक अलग-अलग स्थान पर निवास करते हैं। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी-शिक्षक शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी-शिक्षकों की अपेक्षा सामाजिक रूप से अधिक उन्मुख होंगे। इस आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की समाज उन्मुख जीवन शैली असमान है।

तालिका 5 में टी-अनुपात का मान 1.23 है, जो कि मुक्तांश 58 के 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.02 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की चलन (ट्रेंड) संबंधी जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, को 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की चलन (ट्रेंड) संबंधी जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की चलन (ट्रेंड) संबंधी जीवन शैली लगभग समान है।

इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षक समान आयु वर्ग एवं समान स्तर पर अध्ययन करते हैं। आज ग्रामीण एवं शहरी, दोनों ही क्षेत्रों में सामाजिक एवं आर्थिक विकास हो रहा है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के साधन भी उपलब्ध होंगे। इस कारण सभी विद्यार्थी-शिक्षक फ़ैशन के प्रति (ट्रेंड संबंधी) जीवन शैली में समानता रखते होंगे। इस आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की चलन (ट्रेंड) संबंधी जीवन शैली समान है।

तालिका 6 में टी-अनुपात का मान 3.30 है, जो कि मुक्तांश 58 पर 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.66 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की परिवार उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, को 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की परिवार उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में सार्थक अंतर है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की परिवार उन्मुख जीवन शैली समान नहीं है।

इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षक अलग-अलग क्षेत्रों में

तालिका 5— ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की चलन (ट्रेंड) संबंधी जीवन शैली के मध्यमानों का टी-अनुपात

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	30	33.3	2.36	1.23	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
शहरी	30	32.5	2.65		

तालिका 6 — ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की परिवार उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों का टी-अनुपात

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	30	37.25	3.16	3.30	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक
शहरी	30	34.6	3.05		

निवास करते हैं इसलिए निवास स्थान का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर भी पड़ता होगा। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी-शिक्षकों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी-शिक्षक पारिवारिक रूप से अधिक उन्मुख पाए गए। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त परिवार रहते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में एकल परिवार हैं। इस कारण पारिवारिक मूल्यों का महत्व ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक होगा, इसलिए ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की परिवार उन्मुख जीवन शैली में अंतर पाया गया। इस आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की परिवार उन्मुख जीवन शैली में असमानता है।

निष्कर्ष

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य केंद्रित, शैक्षिक उन्मुख, आजीविका उन्मुख एवं चलन (ट्रेंड) संबंधी जीवन शैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की समाज उन्मुख एवं परिवार उन्मुख जीवन शैली के मध्यमानों में सार्थक अंतर है।

संदर्भ

अब्दुल्लाह ओमर, मारवा और अतिया मोहम्मद फातिया. 2013. द रिलेशनशिप बिटवीन लाइफ़स्टाइल, जनरल हेल्थ एंड एकेडमिक स्कोर्स ऑफ़ नर्सिंग स्टूडेंट्स. *साइंटिफ़िक एंड एकेडेमिक पब्लिशिंग.* 11 सितंबर 2014 को http://article.sapub.org/10.5923.j.phr.20130303.05.html से लिया गया.

एस., पंकज सुवेरा और सुनील एस. जादव. 2014. *ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ द लाइफ़स्टाइल अमंग अर्बन एंड रूरल एजुकेटेड अनिमप्लॉइड् पीपल*. 6 फरवरी 2016 को http://www.indianjournals.com/ijor.aspx?target=ijor:ajrbem&volume=4&issue=5&article=031 से लिया गया.

कुमार, धर्मेन्द्र, श्रोत्रिय और तृप्ति गुप्ता. 2018. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की जीवन शैली का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. *टी.टी.एम.ए.ट्रैक्स— इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल फ़ॉर मल्टीडिसिप्लीनरी स्टडीज़.* वॉल्यूम 1, इश्यू 41, अप्रैल 2018.

कुमार, राजेंद्र, मूलजीभाई परमार. 2016. ए रिलेशनशिप अमंग एडजस्टमेंट, लाइफ़स्टाइल एंड लाइफ़ सैटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ एजुकेटेड अनिमप्लॉइड् यूथ. *दि इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंडियन साइकॉलजी.* वॉल्यूम 4, इश्यू 1, न. 77.

मेक-मिलियन, एच.जे. और शूमेकर. 1989. *रिसर्च इन एजुकेशन.* हार्परकोलिंस पब्लिशर्स, यू.एस.ए.

वानी, एम. और डी. लक्ष्मी. 2013. ए क्रॉसकल्चरल स्टडी ऑफ़ द लाइफ़स्टाइल ऑफ़ कॉलेज स्टूडेंट्स. *जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडैंस एंड रिसर्च.* 30(2). तमिलनाडु.

विकास, के. रोहित और सुरेश एम. मकवाना. 2015. लाइफ़स्टाइल— ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ द आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज स्टूडेंट्स. *दि इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंडियन साइकॉलजी.* वॉल्यूम 2, इश्यू 2, पृ.45–52